International Journal of Enhanced Research inEducational Development (IJERED), ISSN: 2320-8708
Vol. 3, Issue 3, May-June, 2015, pp: (72-77), Impact Factor: 1.267, Available online at: www.erpublications.com

हिन्दी काव्य में संसाधन संरक्षण

डॉ. अशोक कुमार गुप्ता

व्याख्याता–हिन्दी, एम.एस.जे. राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, भरतपुर (राज.)

ABSTRACT

मनुष्य और प्रकृति का परस्पर साहचर्य है। मनुष्य भले ही वनों,पर्वतों और नदी तालावों से दूर रहकर बड़े–बड़े महानगरों में निवास करता हो, लेकिन उसका प्रकृति से मोह कभी कम नहीं हुआ। इस अटूट संबंध की अभिव्यक्ति धर्म, दर्शन, कला और साहित्य में पुरातन काल से चली आ रही है। साहित्य मनुष्य का प्रतिबिम्ब है और इस प्रतिबिम्ब में उसकी सहचरी प्रकृति का प्रतिबिम्बित होना स्वाभाविक है। हिंदी कवियों ने अपने काव्य में प्रकृति के अनेक मनोहारी दृश्यों का चित्रण करके संसाधन संरक्षण का कार्य किया है। यद्यपि पर्वत,नदियाँ, वृक्ष, मैदान ये सब विज्ञानवाद के शिकार हो रहे हैं। आवास संबंधी समस्या को दूर करने के लिए पर्वत और जंगलों को काटकर घर और शहर बनाए जा रहे हैं। इतना होने पर भी कवियों का मोह प्रकृति से कभी कम नहीं हुआ। छायावादी कवियों ने तो नारी सौंदर्य से भी बढ़कर प्रकृति मोह को श्रेष्ठता प्रदान की है। कवियों ने सदैव प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा की है। इन संसाधनों में जल, वन, भूमि, खाद्य, ऊर्जा आदि प्रमुख हैं। इनके संरक्षण के लिए कवियों ने खूब लिखा है साथ ही समाज को भी प्रेरित किया है।

INTRODUCTION

मनुष्य और प्रकृति का अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। वर्तमान में भले ही मनुष्य वनों, पर्वतों और नदी–तालाबों का साहचर्य त्याग कर बडे–बडे शहरों में निवास करने लगा है, परन्तु प्रकृति से उसका मोह कभी कम नहीं हुआ है । मनुष्य और प्रकृति के इस अटूट संबंध की अभिव्यक्ति धर्म, दर्शन, साहित्य और कला में पुरातन काल से चली आ रही है। साहित्य मनुष्य का प्रतिबिम्ब है, और उस प्रतिबिम्ब में उसकी सहचरी प्रकृति का प्रतिबिम्बित होना स्वाभाविक है। अतएव प्रकृति हमारे कवियों के लिए प्रेरणा स्रोत ही नही अपितु सौन्दर्य का अक्षय भंडार, कल्पना का अद्भुत समावेश, अनुभूति की अतल गहराइयाँ तथा विचार और भावों की अटूट शृंखला भी रही है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्रकृति के स्वरूप की चर्चा करते हुए लिखते हैं–''अनन्त रूपों में, प्रकृति हमारे सामने आती है, कहीं मधुर, सुसज्जित या सुन्दर रूप में, विचित्र रूप में; कहीं रूखे बेडोल या कर्कश रूप में; कहीं मत्त, विशाल या विचित्र रूप में; कहीं उग्र, कराल भयंकर रूप में; अतएव काव्य में प्रकृति चित्रण की विविध प्रणालियाँ प्रचलित है ।''अस्तु, कवियों ने अपने काव्य में प्रकृति के अनेक मनोहारी दृश्यों का चित्रण कर संसाधन संरक्षण का भी कार्य किया है ।

यह मानना होगा कि जिस प्रकार मानव के मन में प्रकृति का अनुरागमय स्थान है उसी प्रकार साहित्य में भी दृष्टिगत होता है । कवियों द्वारा काव्य में प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने का अद्वितीय योगदान रहा है। प्रश्न उठता है कि संसाधन क्या है ? अरविंद कुमार, कुसुम कुमार कृत ''समांतर कोश'' ग्रंथ में संसाधन का अर्थ 'उपकरण' तथा 'संपत्ति' से है । मुख्यतः संसाधन का अर्थ 'प्राकृतिक' संपत्ति से है । जिसका संरक्षण आवश्यक

है । आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने अपने रामायण ग्रंथ में अनेक स्थानों पर खिले हुए कमलों, वर्षा ऋतु में मेघों के कारण होती हुई धूप–छांह इत्यादि के अनेक आकर्षक चित्र अंकित किये हैं। महाकवि कालिदास के 'कुमारसंभव', 'रघुवंश' और ऋतुसंहार में भी प्रकृति को संरक्षित किया गया है। इनकी अमर रचना अभिज्ञान शाकुन्तलम् में तो वन, लताएँ, तरू, भ्रमर और पाले हुए हिरण महर्षि कण्व के तपोवन में सजीव हो उठे हैं। परन्तु आज विज्ञान ने सबको पीछे धकेल दिया है । यही कारण है कि मनुष्य इतना आत्मकेन्द्रित और बुद्धिवादी हो गया है कि वह अपनी प्रकृति से जुड़ी अस्मिता को ही भुला बैठा है। विज्ञानवाद की ओर बढते उसके कदम प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों पर निरंतर चोट पर चोट किये जा रहे हैं। वह भुला बैठा है कि वह जिस डाल पर बैठा है, उसी पर चोट कर रहा है । क्या पर्वत, क्या नदियाँ, क्या वृक्ष, क्या मैदान सभी मनुष्य के विज्ञानवाद का शिकार बन रहे हैं। द्रुतगति से बढ़ रही जनसंख्या ने सीमित भूमि पर आवास सम्बंधी समस्या उत्पन्न कर दी है, जिसे हल करने के लिए पर्वत और जंगलो को काटकर घर और शहर बनाये जा रहे हैं । इतना सब कुछ होने के बाद भी कवियों ने इस ओर ध्यान आकर्षित कर संसाधनों की रचना की है। साहित्य में कभी–कभी तो ऐसा भी दौर आया है कि साहित्यकारों ने नारी सौन्दर्य के प्रेम को छोड़कर प्रकृति मोह को श्रेष्ठता दी है। छायावाद के प्रमुख एवं प्रकृति के चितेरे कवि सुमित्रानंदन पंत लिखते हैं–

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले! तेरे बाल–जाल में,
कैसे उलझा दूँ लोचन?
छोड़ अभी से इस जग को।"

इसमें कोई संदेह नहीं कि साहित्यकारों ने प्रकृति से मोह स्थापित कर, प्राकृतिक संसाधनों से प्रेम ही नहीं अपितु इनकी रक्षा के लिए पाठकों को भी प्रेरित किया है। यद्यपि इन संसाधनों में जल संसाधन, वन संसाधन, भूमि संसाधन, खाद्य संसाधन, ऊर्जा संसाधन आदि प्रमुख हैं। हिन्दी साहित्य आदिकाल के प्रमुख कवि अमीर खुसरो के साहित्य में इन संसाधनों की रक्षा बखूबी देख सकते हैं। उनकी मुकरियों का एक श्रेष्ठ उदाहरण द्रष्टव्य है, जिसमें जल संसाधन की चर्चा है –

"वा बिन मोको चैन न आवे ।
वह मेरा तिस आन बुझावे ।।
है यह सब गुन बारह वानी ।
ऐ सखी साजन ना सखी पानी ।।"

वन संसाधनों की रक्षा करते हुए अमीर खुसरो पहेलियों में बूझते हैं–

एक नार तरवर से उतरी मा सो जनम पायो ।
बाप को ठांव जो वासे पूछ्यो आधो नांव बतायो ।।
आधो नांव बतायो खुसरू कौन देश की बोली ।
वाको नांव जो पूछ्यो मैंने अपने नांव न बोली ।।

उक्त पहेली का अर्थ नीम का फल अर्थात 'निबोली' है। भूमि और खाद्य संसाधनों में भी अमीर खुसरो का ध्यान गया और उन्होंने "सगन बिन फूल रही सरसों" कविता में सरसों के माध्यम से खाद्यान्न की रक्षा की है –

"सगन बिन फूल रही सरसों।
अंबवा फूटे, टेसू फूले,
कोयल बोले डार डार,
और गोरी करत सिंगार
मलनिया गुंदवा ले आई कर सों
सगन बिन फूल रही सरसों।"

इसी तरह अनेक खाद्यान्नों की उपयोगिता में बे आँख की पीड़ा को हरने के लिए एक नुस्ख़े में बताते हैं–

लोध फिटकरी मुर्दासंख । हल्दी जीरा एक एक टंक ।।
अफ़यून चना भर मिर्चे चार । उरद बराबर थोथा डार ।।
पोस्त के पानी पुटली करे । तुरत पीड़ नैनों की हरे ।।

इसी तरह ऊर्जा संसाधन पर भी काव्य में खूब लिखा गया है । अमीर खुसरों अपनी मुकरियों में इस प्रकार उल्लेख करते हैं–

रात दिना जाको है गौन ।
खुले द्वार वह आवे मौन ।।
वाको हर एक बतावे कौन ।
ऐ सखी साजन ना सखी पौन ।।

अतएव यह स्पष्ट है कि आदिकालीन साहित्यकारों ने इन संसाधनों को अपनी विषयवस्तु का आधार बनाया है । इसी भाँति भक्तिकाल के कवियों ने भी प्राकृतिक संसाधनों के अनेक चित्र प्रस्तुत कर संसाधनों से प्रेम करने के लिए प्रेरित किया है । महाकवि तुलसीदास अपने 'रामचरित मानस' में प्रकृति का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत करते हुए प्रफुल्लित दिखाई देते हैं –

विकसे सरसिज नाना रंगा । मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा ।।
चातक कोकिल करि चकोरा। कूजत विहंग नाचत मन मोरा ।।

इसी भाँति भक्तिकाल के भक्त शिरोमणि कवि सूरदास प्रकृति का अद्भुत चित्रण करते हैं –

बिनु गोपाल वैरिन भई कुंजैं,
तब ये लता लगति अति शीतल,
अब भई विषम ज्वाल की पुंजैं ।
वृथा वहति जमुना खग बोलत,

वृथा कमल फूलै अलि गुंजै ।
पवन पानि, घनसार सजीवन,
दधि सुत किरन भानु भई भुंजैं।

निर्गुण के उपासक भक्त कबीर भी प्रकृति का सुन्दर चित्रण करके प्रकृति के महत्व को इस प्रकार स्थापित करते हैं–

काहे री नलिनी तूं कुम्हिलानी,
तेरे ही नाल सरोवर पानी ।
नैना नीझर लैया, रहट बसे निसि याम ।
पपीहा ज्यों पिव–पिव करैं, कबहूं मिलहुगे राम ।।

इसी तरह रीतिकाल में भी कवियों ने प्राकृतिक चित्रण के माध्यम से संसाधन प्रेम को अभिव्यक्त किया है। जैसे–कवि ग्वाल का वसन्त वर्णन उल्लेखनीय है जिसमें सरसों के खेत का मनमोहक चित्रण है–

सरसों के खेत की विछायत बनी तामें, खरी चाँदनी बसन्ती रति कंत की।
सोने के पलंग पर वसन वसन्ती साज, सोन जूहि माला हालें हिया हुलसन्त की।
X X X X
राग में बसन्त बाग–बाग में फूल्यो, फाग में बसन्त क्या बहार है बसन्त की।

इसी भाँति आधुनिक काल के साहित्यकारों ने प्रकृति रूपी विश्व–सुन्दरी का मानवीकरण किया है। छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा 'वसन्त रजनी' कविता में बडा मोहक, गत्यात्मक तथा सजीव चित्रण इस प्रकार प्रस्तुत करती है–

''धीरे–धीरे उतर क्षितिज से आ वसंत रजनी!
तारकमय नव वेणी बंधन,
शीशफूल कर शशि का नूतन,
रश्मिवलय सित घन अवगुंठन,
मुक्तादल अभिराम विछा दे चितवन से अपनी।
पुलकती आ वसंत रजनी।''

वर्तमान कवि भी प्रकृति चित्रण प्रस्तुत करने में कभी पीछे नहीं रहे। समकालीन कवि नारायण कृष्ण 'अकेला' ने अपने 'चेतना के अंकुर' गीत संग्रह में सरसों युक्त हरे–भरे खेतों का वर्णन इस प्रकार किया है–

"ये पीली पीली सरसों ये हरे हरे से खेत ।
ये चाँदी जैसी किरणें ये सोने जैसी रेत ।।"

अतएव यह स्पष्ट है कि कवियों ने अपने काव्य साहित्य में प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण करते हुए संसाधनों का महत्व तथा उनकी रक्षा करने का प्रयास किया है ।

समाहार

सृष्टि के निर्माण से आज तक मानव निरंतर प्रगति एवं उन्नति करता आ रहा है । जैसे–जैसे उसकी आवश्यकता बढ़ती गयी, त्यौं–त्यौं उसी के अनुसार साधन बढ़ते गये । इसका दुष्परिणाम संसाधनों का असीमित एवं विवेकहीन उपयोग के रूप में दिखाई देने लगा। हमारे जीवनयापन के लिए प्रकृति ने अनेक संसाधन दिये हैं जिसका उपयोग मानव अपनी सुविधानुसार कर रहा है। जनसंख्या वृद्धि के कारण जल संसाधन, वन संसाधन, भूमि संसाधन, खाद्य संसाधन तथा ऊर्जा संसाधन पर विशेष प्रभाव पड़ा है । जल संसाधन की तो स्थिति यह होती जा रही है कि मानव आने वाले समय में जल की एक एक बूंद के लिए तरसेगा । सरकार इस ओर अनेक प्रयास कर रही है जिससे जल स्तर बढ़े तथा वर्षा जल को रोकने के लिए घरों मे विशेष टैंक निर्माण करने के लिए प्रेरित कर रही है । अपशिष्ट जल को पुनःस्वच्छ कर उपयोग में लाने के लिए भी योजना बना रही है।

वन संसाधनों के संरक्षण के लिए वनों के विनाश को रोका जा रहा है । वृक्षों की कटाई तने से न होकर केवल डालियों से हो ताकि वह पुनः वृद्धि कर हरा भरा रह सके । हरे पेड़ों की कटाई पर सजा एवं जुर्माना सरकार द्वारा तय किया जा चुका है। ऐसी स्थिति मे वृक्षों की कटाई रोकी जाये ताकि मृदा एवं भूमि का क्षरण रोका जा सके तथा पर्यावरण स्वच्छ रहे।

भूमि संसाधन संरक्षण की आवश्यकता है क्योंकि औद्योगीकरण एवं लगातार शहरीकरण के कारण आवासों के निर्माण से भूमि का निरंतर क्षरण हो रहा है। पेड़–पौधों के स्थान पर बजरी–कंकरीट के घर बनते जा रहे हैं जिससे भूमि संसाधनों का उपयोग सीमित हो गया है।

खाद्य संसाधन मनुष्य को जीवित रखने के लिए आवश्यक है । जनसंख्या वृद्धि से खाद्यान्न की समस्या हो गई है । ऐसी स्थिति में हमें कृषि क्षेत्र में खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि करने की आवश्यकता है।

ऊर्जा संसाधनों को दो वर्गो में बाँटा जा सकता है, परम्परागत ऊर्जा स्रोत एवं गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत। परम्परागत ऊर्जा स्रोत उपयोग में आते–आते समाप्त होने लगते हैं, जैसे कोयला, पैट्रोलियम, प्राकृतिक गैस आदि। गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत में वे ऊर्जा संसाधन आते हैं जो उपयोग में आने पर भी समाप्त नहीं होते हैं। जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, भूतापीय ऊर्जा आदि। परम्परागत ऊर्जा स्रोतों का उपयोग सीमित एवं विवेक संगत करना चाहिए तथा गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

उपर्युक्त सभी संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता है। साहित्य की विषयवस्तु सभी संसाधनों को संरक्षित करती हैं, साथ ही पाठकों को इनके संरक्षण के लिए सावचेत करती हैं।

अंत में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की 'सखि बसन्त आया' कविता का मनोहारी दृश्य उल्लेखनीय है –

"सखि बसन्त आया।
भरा हर्ष वन के मन,
नवोत्कर्ष छाया।
किसलय वसना नव वय लतिका
मिली मधुर प्रिय उर तरु–पतिका,
मधुप–वृन्द बन्दी–
पिक–स्वर नभ सरसाया ।"

संदर्भ–ग्रंथ

1. समांतर कोश, अरविन्द कुमार, कुसुम कुमार, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली ।
2. आधुनिक हिन्दी निबंध, ओ.पी.मिश्र, वोहरा पब्लिशर्स एण्ड ड्रिस्ट्रीव्यूटर्स, इलाहावाद ।
3. अशोक निबंध सागर, विजय कुमार, कृष्ण देव शर्मा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली।
4. साहित्यिक निबंध, डॉ॰ दुर्गाप्रसाद मिश्र एवं डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ ।
5. अमीर खुसरो, सं. सुदर्शन चौपड़ा, हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली ।
6. हिन्दी भाषा ज्ञान, डॉ॰ हरिचरण शर्मा, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर ।
7. रामचरित मानस, तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर ।
8. पर्यावरण शिक्षा, संयोजक–प्रहलाद कुमार शर्मा, मा. शि. वो. राज. अजमेर ।
9. साहित्यिक निबंध, गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।